इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

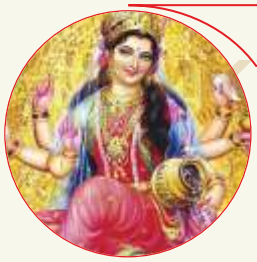

षोड़श कला लक्ष्मी स्थापना साधना

17 सितम्बर, अनन्त चतुर्दशी

बात चाहे सम्पूर्ण राष्ट्र स्तर की हो या किसी के व्यक्तिगत जीवन के स्तर की, दोनों की ही प्रगति को आर्थिक स्थिति के तराजू पर तोला जा सकता है। अर्थ को भी पुरुषार्थ कहा गया है। अर्थ या लक्ष्मी किसी पुरुष को ही सिद्ध हो सकती है। वह पुरुष जिसमें क्षमता हो, पुरुषार्थ हो, साधना करने का दम-खम हो, और दैवीय सहायता को हठपूर्वक प्राप्त करने की क्षमता रखता हो और वह भी तब जब गुरूदेव द्वारा प्रदत्त साधना-पद्धति प्राप्त हो, मंत्र प्राप्त हो। यह साधना भगवती लक्ष्मी के 16 कलाओं के भवन, संतान, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, सेवक आदि हर प्रकार की भौतिक पूर्णता हेतु अद्भुत उपाय है।

गुरू आत्म वार्तालाप प्रयोग

28 सितम्बर, इंदिरा एकादशी

सिद्धाश्रम संस्पर्शित गुरूओं की यह विशेषता है, कि वे अपने संन्यासी शिष्यों को संन्यास प्रदान करने के पूर्व उसे यह साधना अवश्य ही प्रदान करते हैं, जिससे शिष्य कहीं भी रहे, किसी भी स्थिति में हो, वह मानसिक रूप से अपने गुरू से सम्पर्क प्राप्त कर अपने क्रम में निरन्तर गतिशील बना रहे सके। इस साधना को सम्पन्न करने के बाद साधक को गुरूदेव से मानसिक रूप से वार्तालाप होने की स्थिति निर्मित होती है। साधक अपने समस्या का निदान गुरूदेव जी से मानसिक रूप से प्राप्त कर सकते हैं।

ललिता महाविद्या प्रयोग

07 अक्टूबर, उपांग ललिता शक्ति आवाहन दिवस

जीवन में भौतिक रूप से उतार-चढ़ाव आते ही हैं, उथल-पुथल होती ही है, जो हर स्थिति में सम रहे, प्रसन्न रह सके, आनन्दित रह सके और इसके लिये आवश्यक है, कि वह मनश्चेतना के स्तर पर काफी ऊपर उठा हुआ व्यक्ति हो तभी वह जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकता है, अन्यथा सकल सम्पदा होते हुए भी सब व्यर्थ है। मन को पूर्ण चैतन्यता दृढ़ता और अडिगता प्रदान करने की ही यह साधना है, जो आज के युग में प्रत्येक व्यवसायी के लिये अनिवार्य ही है।

प्रेत बाधा निवारक हनुमान प्रयोग

15 अक्टूबर, भौम प्रदोष व्रत

जीवन में बल, बुद्धि, साहस, कर्मठता, तेजस्विता, ओज और संकटों पर विजय प्राप्त कर लेने का साहस और सब कुछ अदम्य उत्साह का मिला जुला रूप यदि कहीं है, तो उसे हनुमान कहते हैं। जीवन में सैकड़ों बाधाएं, परेशानियां, घर में कलह, आए दिन एक्सीडेंट, चोट लगना, खर्च का तेजी से बढ़ जाना, घर में लोगों का बीमार रहना ये सब तंत्र बाधा के कारण भी हो सकते हैं। अनजाने में हमसे भी कुछ दोष हो जाते हैं जिससे जीवनी शक्ति समाप्त सी हो जाती है। प्रेत बाधा निवारक हनुमान प्रयोग द्वारा ऐसी कोई भी बाधा टिक नहीं सकती है। इस साधना के बाद हनुमान सदैव साधक की रक्षा करते हैं।

साधना एक साधक के जीवन का अभिन्न अंग है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव सद्गुरूदेव के हृदय में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करते हैं। ये विशिष्ट साधनायें सम्पन्न करने के लिए कैलाश सिद्धाश्रम में सम्पर्क करें।